नई नागरिक सुरक्षा संहिता विधि 08
संघ कभी आरक्षण विरोधी नहीं रहा 10
तपस्थली घोटिया आम्बा तीर्थ 12

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

वैशाख शु. 8, वि. 2081, युगाब्द 5126, 16 मई, 2024

39 वर्षों से निरंतर

असाधारण शासनकर्ता

लोककल्याणकारी

न्यायप्रिय

पर्यावरण संरक्षक

किसान, महिला व जनजाति संरक्षक

मंदिरों की जीर्णोद्धारक

महारानी अहिल्याबाई होल्कर

300वां जयंती वर्ष

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

www.patheykan.com

संग्रहणीय अंक

पाथेय कण के वर्ष प्रतिपदा (1अप्रैल) अंक के मुख पृष्ठ का मनोहारी दृश्य सुखद अनुभूति दे गया। संघ की अ.भा.प्रतिनिधि सभा, नागपुर बैठक का दृश्य, मंच पर विराजमान सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत और सरकार्यवाह दत्तात्रेय जी होसबाले व सामने संघ कार्य के लिए जीवन समर्पित करने वाले सैंकड़ों तपस्वी-मनस्वी कार्यकर्ता 'तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें-न रहें' की भावधारा के इस गतिमान दृश्य को देख कर आनंदानुभूति हुई। राममंदिर: हमारी राष्ट्रीय अस्मिता के लिए हो रहे समर में तटस्थ न रहने का आह्वान, संघ कार्य के विस्तार और अ.भा. प्रतिनिधि सभा के कार्यों को इतिवृत्त समेटती सामग्री के साथ संग्रहणीय अंक है।

- श्रीराम शर्मा, खाचरियावास,सीकर

हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का संस्कृत की तरह हाशिए पर जाने का खतरा

देश भर में ग्यारहवीं-बारहवीं का नया सत्र लगभग प्रारंभ किया जा चुका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत 11वीं एवं 12वीं कक्षा में एक विदेशी भाषा (अंग्रेजी) के साथ-साथ एक भारतीय भाषा (नैटिव लैंग्वेज) का विकल्प अनिवार्य किया गया था। परंतु इस सत्र में भी सीबीएसई से संबद्ध लगभग सभी निजी विद्यालयों में अंग्रेजी को ही अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाया जा रहा है। वहाँ हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को एक वैकल्पिक विषय के रूप में ही स्थान दिया जा रहा है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उत्तर भारत के तमाम ऐसे भी निजी विद्यालय हैं, जहाँ ग्यारहवीं-बारहवीं में 200-200 विद्यार्थी नामांकित हैं, परंतु वहाँ एक भी विद्यार्थी ने हिंदी विषय नहीं चुना है। कई निजी विद्यालय अंग्रेजी को प्रश्रय एवं प्रोत्साहन देते हैं। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा को दोयम दर्जे की भाषा की तरह प्रस्तुत किया जाता है। कई निजी विद्यालयों में तो हिंदी बोलने पर भी पाबंदी है अथवा दंड का प्रावधान है।

ऐसे में जो थोड़े-बहुत बच्चे ग्यारहवीं में हिंदी को एक विषय के रूप में चुनते भी हैं, वे हतोत्साहित रहते हैं। हिंदी लिखने, हिंदी पढ़ने से बच्चे बचते हैं, जबकि सत्य यह है कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम मात्र नहीं, संस्कृति की सबसे समर्थ एवं सशक्त संवाहिका भी होती है। भारतीय ज्ञान-परंपरा का संरक्षण एवं संवर्द्धन भी भारतीय भाषाओं में ही संभव है। बिना हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को अनिवार्य किए, संस्कृत की तरह एक दिन अन्य भारतीय भाषाएँ भी हाशिए पर चली जाएंगी और वर्तमान पीढ़ी भारत के 'स्व' का साक्षात्कार करने से वंचित रह जाएगी। भारत का साक्षात्कार कराने, स्व का बोध कराने तथा अपनी जड़ों, संस्कारों व जीवन-मूल्यों से वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को जोड़े रखने के लिए हिंदी या एक भारतीय भाषा (नैटिव लैंग्वेज) को अनिवार्य करने का निर्णय सर्वथा उचित एवं समायोचित है। समय आ गया है कि सीबीएसई/ एनसीईआरटी/शिक्षा मंत्रालय द्वारा सभी निजी विद्यालयों को निर्देशित किया जाना चाहिए कि वे ग्यारहवीं-बारहवीं में एक भारतीय भाषा अनिवार्यत: पढ़ाएं। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मूल भावना के अनुरूप है।

-प्रणय कुमार, शिक्षाविद एवं वरिष्ठ स्तंभकार

देवर्षि नारद पत्रकार सम्मान समारोह - 2024

विश्व संवाद केन्द्र द्वारा प्रतिवर्ष नारद जयंती को पत्रकार दिवस के रूप में मनाया जाता है। मीडिया जगत के विभिन्न क्षेत्रों यथा प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, सोशल मीडिया, पोर्टल, कार्टून आदि विधाओं में उत्कृष्ट कार्य करने वाले पत्रकार साथियों को इस दिन सम्मानित किया जाता है। विश्व संवाद केन्द्र की ओर से आयोजित जयपुर प्रांत का कार्यक्रम 25 मई को जयपुर में पाथेय भवन के देवर्षि नारद सभागार, मालवीय नगर में, चित्तौड़ प्रांत का 26 मई को प्रात: 11 बजे भीलवाड़ा के शगुन फूडकोर्ट, आरसी व्यास कॉलोनी में तथा जोधपुर प्रांत का 24 मई को बृहस्पति सभागार, जेएनवी विश्वविद्यालय, जोधपुर में रखा है।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- **अमेरिकी बैंक क्यों हो रहे दिवालिया ?**
  https://patheykan.com/?p=26325
- **बेनकाब होते पश्चिम के दोहरे मापदंड**
  https://patheykan.com/?p=26368

पाथेय कण
वैशाख शु.8 से ज्येष्ठ कृ.8 तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
16-31 मई, 2024
वर्ष : 40 अंक : 4

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
सम्पादन सहयोगी : हेमलता चतुर्वेदी
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय
"पाथेय भवन" 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द
सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर संपर्क करें-
WhatsApp 79765 82011
Mobile No. 94136 45211
99297 22111
पाथेय कण प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि UPI से Mob.No. 7976582011 पर भेजें

नारी विरोधी नैरेटिव की सच्चाई

आज जब पूरा देश भारत (इंदौर-मालवा) की महान शासक पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई की 300वीं जयंती मनाने जा रहा है तब भारत की महान सभ्यता और संस्कृति को कमतर दिखाने के इरादे से भारत के इतिहास को लिखने वाले विदेशी इतिहासकार एवं भारत में जन्मे उनके मानस पुत्र वाम स्यूडो सेक्युलर बिरादरी के इतिहासकारों द्वारा निर्मित एक सरासर झूठे नैरेटिव की बात करना समसामयिक होगा। उन्होंने नैरेटिव (धारणा-विचार-विमर्श) बनाया कि सनातन हिंदू भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा बड़ी दयनीय रही है, उन्हें दोयम दर्जे का माना गया, उन्हें दबाकर रखा गया। अपनी बात के समर्थन में वे बाल विवाह, स्त्री शिक्षा का अभाव, सती-देवदासी प्रथा आदि का उदाहरण देते हैं।

ये सच है कि ये कुरीतियां भारतीय समाज में रही हैं, परन्तु ये कुरीतियां सनातन हिंदू समाज की पहचान नहीं हैं। हजारों वर्षों के लंबे कालखंड में इन कुरीतियों का कालखंड बहुत कम रहा है और आज इनमें से अधिकांश का अस्तित्व भी नहीं रहा है। जैसे-जैसे स्त्री शिक्षा में बढ़ोतरी हो रही है, भारत की महिलाएं फिर से अपना प्राचीन गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर रही हैं।

विश्व के प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद में 24 तथा यजुर्वेद में 5 विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है जो वेद मंत्रों की दृष्टा(साक्षी, रचनाकार) थीं। इन विद्वान ऋषिकाओं में अपाला, घोषा, सरस्वती, सर्पराज्ञी, सावित्री, सूर्या, अदिति, लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी, रोमशा आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

बृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार राजा जनक के दरबार में ऋषि याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने वालों में विदुषी गार्गी का उल्लेख मिलता है। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी स्वयं एक विदुषी महिला थीं। आद्य शंकराचार्य और काशी के विद्वान मंडन मिश्र के बीच हुए शास्त्रार्थ में निर्णायक की भूमिका एक स्त्री (उभय भारती) ने ही निभाई थी।

यजुर्वेद के मंत्र (20,9) में स्त्री-पुरुष दोनों के शासक चुने जाने के समान अधिकार की बात कही गई है। यजुर्वेद (17,45) में स्त्रियों की सेना और युद्ध में उनके भाग लेने संबंधी उल्लेख मिलते हैं। अथर्ववेद के एक अन्य मंत्र (11,1,17) में स्त्रियों को शुद्ध, पवित्र, यज्ञीय (यज्ञ के समान पूजनीय) माना गया है।

अथर्ववेद के मंत्रों (7,38,4 एवं 12,3,52) में निर्देश दिया गया है कि स्त्रियां सभा और समिति में जाकर भाग लें और अपने विचार प्रकट करें। महानिर्वाण तंत्र के अनुसार 'एक लड़की को भी पूरे परिश्रम और देखभाल के साथ पढ़ाना और उसका पालन-पोषण करना चाहिए।' अथर्ववेद (11,5,18) में कहा गया है कि कन्याएं ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विदुषी होकर युवती अवस्था में विवाह करें। अकेले ऋग्वेद में इस तरह के नारी-विषयक 422 मंत्र बताए जाते हैं।

ऋग्वेद के दशम मण्डल के 102वें सूक्त में राजा मुद्गल के साथ ही रानी इन्द्रसेना (मुद्गलानी) की युद्ध में भाग लेने की कथा मिलती है जो युद्ध में उन्हें विजय दिलाती है। वृत्रासुर की माता 'दनु' ने युद्ध में भाग लिया था और इन्द्र से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की थी। महाराजा दशरथ की रानी कैकेई उनके साथ युद्ध में जाती थी। कैकेई द्वारा राजा दशरथ की जान बचाने का विवरण ग्रंथों में मिलता है।

सनातन हिंदू भारतीय समाज में धन, विद्या और शारीरिक शक्ति के लिए तीन देवियों-लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा करने का विधान है।

यशस्वी महिला शासक परंपरा

भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में यशस्वी महिला शासक हुई हैं। कर्नाटक में कित्तूर की रानी चेन्नमा, तमिलनाडु के रामनाथपुरम की रानी वेलु नेचियार और उसकी सेनापति कुयिली, काकतीय वंश की रानी रुद्रमा देवी, पुर्तगालियों के साथ युद्ध करने वाली तुलुनाडु (तटीय कर्नाटक) की रानी अब्बक्का, मध्य भारत की गोंडा रानी दुर्गावती, इंदौर-मालवा की अहिल्याबाई होल्कर, गुप्त साम्राज्य में वाकाटक की रानी प्रभावती गुप्त, मराठा महारानी ताराबाई, कश्मीर की रानी रिद्धा, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी अनेक महिला शासक हुई हैं।

योद्धा के रूप में महाराजा रणजीत सिंह की पत्नी महारानी जिंद कौर (लाहौर की शेरनी), मेघालय की रानी गाइदिन्ल्यु, धार (म.प्र.) की रानी द्रौपदीबाई, महाराष्ट्र व बंगाल की क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रोत्साहन देने वाली महारानी तपस्विनी, तुलसीपुर की रानी ईश्वर कुमारी, मध्यप्रदेश के रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी, वीरांगना उदा देवी, अनूप शहर की चौहान रानी, नाना साहेब पेशवा की पुत्री मैना, झांसी की सेना में झलकारी तथा मुन्दर देवी, नेताजी सुभाष की लक्ष्मीबाई रेजीमेंट में वीरांगनाओं सहित एक लंबी सूची भारत की महान महिला योद्धाओं की है। क्रांतिकारी प्रभावती, असम की कनकलता बरूआ सहित गांधी जी के स्वाधीनता संघर्ष में भी अनेक महिला नेत्रियों की भागीदारी रही।

प्राचीन और अर्वाचीन (वर्तमान भारत) की इस यशस्वी मातृशक्ति की सार्वजनिक चर्चा करने सहित इतिहास की पुस्तकों व पाठ्यपुस्तकों में उल्लेखनीय विवरण समाहित करने की आवश्यकता है। ऐसा होने पर भारत को कमतर दिखाने वाले विदेशी इतिहासकारों व वर्तमान के वाम स्यूडो सेक्युलर लॉबी का महिला विरोधी एवं भारत विरोधी नैरेटिव स्वत: ही ध्वस्त होता दिखाई देगा।

-रामस्वरूप

अहिल्याबाई होल्कर का 300वां जयंती वर्ष

आज भी प्रासंगिक हैं अहिल्याबाई के प्रबंधन व शासन सूत्र

वर्तमान में नारी शक्ति पर चर्चा होती है परन्तु भारत देश में सशक्त नारी का अनुपम उदाहरण रानी अहिल्याबाई होल्कर को माना जा सकता है। वे न केवल कुशल प्रशासक थीं, बल्कि समाज उत्थान व पर्यावरण संवर्द्धन की भी प्रणेता कही जा सकती हैं।

■ *हेमलता चतुर्वेदी*

महाराष्ट्र सरकार ने वर्ष 2023 में अहमद नगर का नाम बदल कर 'अहिल्या नगर' रख दिया। अहिल्या नगर की विशेषता यह है कि इसी नगर के जामखेड स्थित चौंडी गांव में अहिल्या बाई का जन्म हुआ था। 31 मई, 1725 को जन्मी अहिल्याबाई होल्कर 11 दिसम्बर,1767 को इंदौर की शासक बनीं। ऐसी शासनकर्ता जो स्वयं को राजगद्दी पर भगवान शिव का प्रतिनिधि मानती थीं। इसीलिए उनके राज्य की राजमुद्रा का नाम 'श्री शंकर आज्ञेवरून' अर्थात् 'श्री शंकर जी की आज्ञानुसार' था।

देश के लिए हर्ष का विषय है कि इस वर्ष अहिल्याबाई होल्कर का 300वां जयन्ती वर्ष मनाया जा रहा है। अहिल्याबाई होल्कर की शासन व्यवस्था, सनातन के प्रति आस्था, पर्यावरण विकास एवं संवर्द्धन के साथ ही नगर विकसित करना, मंदिरों का पुनर्निर्माण, नारी सशक्तिकरण, कला-साहित्य का विकास तथा न्याय एवं सामाजिक समरसता के विषय आज भी प्रासंगिक हैं।

मिली 'पुण्यश्लोक' की उपाधि

ये अहित्याबाई ही थीं, जिन्होंने सम्राट औरंगजेब द्वारा तोड़े गए काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया। इसके अलावा बद्रीनाथ से रामेश्वरम् तक और द्वारिका से लेकर पुरी तक आक्रमणकारियों द्वारा क्षतिग्रस्त मंदिरों का भी पुनर्निर्माण करवाया। इसमें सोमनाथ में बनवाया गया शिव मंदिर भी है। द्वारका, काशी विश्वनाथ, वाराणसी के गंगा घाट, उज्जैन, नासिक, विष्णुपद मंदिर और बैजनाथ के आस-पास धर्मशालाएं बनवाईं। इसके परिणामस्वरूप प्राचीन काल में खंडित हुई तीर्थ यात्राओं में नवीन चेतना आई। इसी महान् कार्य के कारण उन्हें 'पुण्यश्लोक' की उपाधि मिली।

चौंडी गांव से पहुंची इंदौर राजघराने में

नारी सशक्तिकरण का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि साधारण परिवार में जन्मी अहिल्या को उनके पिता ने उस कालखंड में घर में ही पढ़ना-लिखना सिखाया, जब गांवों में लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता था। इसी शिक्षा के आधार पर अहिल्याबाई का व्यक्तित्व बचपन में ही इतना प्रभावशाली बना कि उन दिनों जब तत्कालीन सूबेदार मल्हार राव होल्कर पुणे जाते समय चौंडी गांव में विश्राम के लिए रुके तो उन्होंने देखा कि एक आठ वर्षीय बालिका भूखे- गरीब लोगों को भोजन करवा रही थी। यह कोई और नहीं बल्कि अहिल्याबाई होल्कर ही थीं। उनके ऐसे आचरण और संस्कार से प्रभावित होकर मल्हार राव ने अहिल्याबाई का रिश्ता अपने बेटे खांडेराव के लिए मांग लिया। इस प्रकार आज के 'अहिल्या नगर' की अहिल्याबाई विवाह के बाद राजघराने की सदस्य बन इंदौर पहुंच गई।

बनी इंदौर- मालवा की शासक

अपने ससुर मल्हार राव से भी उन्हें पिता तुल्य स्नेह मिला। मल्हार राव ने उन्हें राजकाज की शिक्षा दी। कुम्हेर युद्ध में उनके पति खांडेराव की मृत्यु हो गई। नारी सम्मान का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मल्हार राव ने अहिल्याबाई को सती नहीं होने दिया। बाद में जब उनके ससुर की भी मृत्यु हो गई तो अहिल्याबाई ने राजधर्म का पालन करते हुए इंदौर मालवा की शासन व्यवस्था अपने हाथ में लेने के लिए पेशवा के समक्ष याचिका प्रस्तुत की। पेशवा की अनुमति मिलने पर उन्होंने इंदौर का शासन संभाला।

जनकल्याणकारी कार्य एवं धर्म संस्कृति का संरक्षण

इस अवधि में अहिल्याबाई ने भारत के उत्तर से दक्षिण तक कई प्रसिद्ध तीर्थों में मंदिर व धर्मशालाएं बनवाई, पवित्र नदियों के घाट बनवाए, कुओं, बावड़ियों, बांधों और तालाबों का निर्माण करवाया। तीर्थ यात्रियों के लिए तीर्थ स्थानों पर अन्न क्षेत्र तथा पीने के पानी के लिए प्याऊ बनवाई। मंदिर केवल आस्था के ही केन्द्र नहीं होते हमारी सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित करने का भी माध्यम हैं। इसे ध्यान में रखते

असाधारण शासनकर्ता

देवी अहिल्याबाई होलकर का जीवन भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम पर्व है। ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले सामान्य परिवार की बालिका से एक असाधारण शासनकर्ता तक की उनकी जीवन यात्रा आज भी प्रेरणा का महान स्रोत है। वे कर्तृत्व, सादगी, धर्म के प्रति समर्पण, प्रशासनिक कुशलता, दूरदृष्टि एवं उज्ज्वल चारित्र्य का अद्वितीय आदर्श थीं। उनका लोक कल्याणकारी शासन भूमिहीन किसानों, भीलों जैसे जनजाति समूहों तथा विधवाओं के हितों की रक्षा करने वाला एक आदर्श शासन था। समाज सुधार, कृषि सुधार, जल प्रबंधन, पर्यावरण रक्षा, जनकल्याण और शिक्षा के प्रति समर्पित होने के साथ-साथ उनका शासन न्यायप्रिय भी था। समाज के सभी वर्गों का सम्मान, सुरक्षा, प्रगति के अवसर देने वाली समरसता की दृष्टि उनके प्रशासन का आधार रही। केवल अपने राज्य में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण देश के मंदिरों की पूजन-व्यवस्था और उनके आर्थिक प्रबंधन पर भी उन्होंने विशेष ध्यान दिया। संपूर्ण भारतवर्ष में फैले हुए इन पवित्र स्थानों का विकास वास्तव में उनकी राष्ट्रीय दृष्टि का परिचायक है।

(संघ की अ.भा.प्रतिनिधि सभा-2024 में सरकार्यवाह द्वारा दिए गए वक्तव्य के अंश)

हुए अहिल्याबाई ने मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति भी करवाई, जिससे वहां शास्त्रों का चिंतन-मनन एवं प्रवचन होता रहे।

महिला सशक्तिकरण

महिलाओं के प्रति विशेष सहानुभूति रखते हुए उन्होंने कई कार्य किए, जैसे विधवा महिला, जिसके कोई पुत्र भी न हो, उसकी संपत्ति राजकोष में जमा करवाने का नियम था। उन्होंने इस नियम को बदला तथा ऐसी महिलाओं को पति की सम्पत्ति की उत्तराधिकारी मानकर उन्हें छूट दी कि वे अपनी इच्छानुसार उस सम्पत्ति का उपयोग करें। इसी क्रम में उन्होंने पवित्र नदियों पर जहां-जहां भी घाट बनवाए वहां स्त्रियों के लिए अलग विशेष व्यवस्था की।

कुशल सेनापति

अहिल्याबाई ने अपने ससुराल में न केवल राजकाज की शिक्षा पाई, बल्कि वे एक बहादुर योद्धा भी बनीं। अपने शासन काल के पहले वर्ष में ही उन्होंने बहादुरी का परिचय दिया और लुटेरों से मालवा की प्रजा की रक्षा की। कई युद्धों में सेना का नेतृत्व करने वाली अहिल्या बाई कुशल तीरंदाज भी थी। वे अपने पति के साथ भी युद्धों में जाया करती थीं।

विकास की सूत्रधार

अहिल्याबाई होल्कर के कार्यकाल में इंदौर जैसा छोटा सा गांव विकसित शहर बन गया। अहिल्या बाई ने ही मालवा में सड़कें व किले बनवाने का कार्य किया। उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन दिया। उनके शासन काल में वाणिज्य अभिवृद्धि पर पूरा जोर दिया गया। किसान आत्मनिर्भर बनें, उन्हें शीघ्र न्याय देने की व्यवस्था की गई। उनके शासन काल में गांव में पंचायत व्यवस्था, कोतवाल व पुलिस व्यवस्था व न्यायालय की स्थापना की गई।

ब्रिटिश समाज सेविका और कांग्रेस पार्टी की पहली महिला अध्यक्ष एनी बेंसेट के अनुसार "अहिल्याबाई के शासन काल में सड़कों के दोनों ओर पेड़ लगे होते थे। राहगीरों के लिए कुंए और विश्राम गृह बनाए गए। गरीबों और बेघरों की जरूरतें पूरी की गईं। उन्होंने वनवासियों को मनाया कि वे जंगलों से निकल कर गांव में किसानों की तरह जीवन यापन करें।

राज्य भगवान शिव का माना

सनातन धर्म में मान्यता है कि सम्पूर्ण सृष्टि ईश्वरीय विधान से चल रही है। इसी अवधारणा का पालन करते हुए रानी अहिल्याबाई राज आज्ञा पत्रों पर हस्ताक्षर के रूप में 'शंकर' लिख देती थीं। उनका मानना था कि यह राज्य भगवान शिव का है और वे उनकी सेविका के रूप में राजकार्य कर रही हैं। उनके राज्य के रुपयों पर शिवलिंग और बिल्व पत्र तथा सिक्कों पर नंदी का चित्र अंकित था।

पर्यावरण विकास

जानकारी के अनुसार , महारानी अहिल्याबाई मिट्टी के शिवलिंग बनाकर उनकी पूजा करती थीं। जब पूजा के बाद वे उन्हें विसर्जित करतीं तो इन शिवलिंगों में अनाजे के दाने रख देती थीं या बीज रख देंती। इससे दो काज सिद्ध होते, एक तो नदी तल में बीज और दाने जाने से समुद्री जीवों को पोषण मिलता और अगर ये बीज बहकर नदी किनारे आ जाते तो अंकुरित होकर वृक्ष बन जाते। इस प्रकार हरियाली बढ़ाने में योगदान दिया।

रानी अहिल्याबाई के आदेश पर ही किसानों ने खेत की मेड़ पर 20-20 छायांदार और फलदार पेड़ लगाए। इसमें नींबू, गूलर, बरगद, आम तथा इमली को प्राथमिकता दी गई। इसका फायदा यह हुआ कि मिट्टी का क्षरण होना बंद हो गया। हरियाली बढ़ने के साथ ही कृषकों की आय भी बढ़ी। इस प्रकार रानी

अहिल्याबाई की सूझ-बूझ से पर्यावरण विकास, पशु-पक्षी पोषण एवं मृदा संरक्षण जैसे जलवायु संरक्षण को भी साधा गया। ऐसे उपाय आज के समय में भी प्रासंगिक हैं।

न्यायप्रियता

रानी अहिल्याबाई का एक और गुण उन्हें लोकप्रिय शासक के रूप में स्थापित करता है, वह है उनकी न्यायप्रियता। वे ऐसा न्याय करने में विश्वास रखती थीं, जिसके आधार पर प्रजा को सताने वाले को भी दंड न देकर उसे समझाने को प्राथमिकता दी जाती थी। अपराधियों को सुधारने पर ध्यान दिया जाता था। जन सुनवाई कार्यक्रम जो आजकल बहुत प्रचलित है, ऐसा ही कार्यक्रम अहिल्याबाई के शासनकाल में ही शुरू हो चुका था। रानी अहिल्याबाई प्रतिदिन एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करती थी, जिसमें वे लोगों की समस्याओं को सुनकर उनका निवारण करती थीं।

प्रजा की संतुष्टि ही प्रमुख

अहिल्याबाई कुशल प्रशासक एवं प्रजा की संरक्षक थीं । वे प्रजा से न्यूनतम कर की वसूली करती थीं। कर का उपयोग भी केवल प्रजा हित के कार्यों के लिए ही किया जाता था। स्वयं को प्रजा की संरक्षक मानने वाली अहिल्याबाई प्रजा को संतुष्ट रखना ही राज्य का मुख्य कार्य मानती थीं।

भारत सरकार व कई राज्य सरकारों ने अहिल्याबाई की प्रतिमाएं लगवाई हैं। उनकी स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए अनेक संस्थाओं व योजनाओं का नामकरण उनके नाम पर किया गया है।

प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में ''अहिल्याबाई ने इंदौर पर तीस वर्षों तक शासन किया। यह समय सुशासन और व्यवसायिक दृष्टि से यादगार माना जाता है। वे एक कुशल शासक और प्रबंधक थीं। पूरी जिंदगी लोगों के बीच सम्माननीय रहीं तथा मृत्यु के बाद एक संत के रूप में उन्हें याद किया जाता है। अहिल्याबाई होल्कर ने भारत में धर्म का संदेश प्रसारित किया, संस्कृति और विरासत संजोने के साथ ही विकास को बढ़ावा देते हुए औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहन दिया। उनके सारे प्रबंधन सूत्र वर्तमान में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, इसलिए अनुकरणीय भी हैं। आज भी धर्म व संस्कृति का संरक्षण करना भारत की एकता और अखण्डता के लिए आवश्यक है।

(संपादन सहयोगी पाथेय कण)

सावरकर ने कहा था -

''मेरी प्रथम अभिलाषा भारत माता को स्वतंत्र देखने की है बाकी सब बातें गौण हैं''

लंदन में 1857 के स्वातंत्र्य समर की अर्द्धशताब्दी मना मचाया था तहलका

▪ *डॉ.राकेश कुमार शर्मा*

सावरकर का नाम मुख पर आते ही उस प्रात: स्मरणीय महान व्यक्तित्व की निर्भीकता और रोमांचक साहस गाथाओं की ही याद नहीं आती, बल्कि एक ऐसे बुद्धिजीवी की भी याद आती है, जिसने अपनी लेखनी से पूरे विश्व को भारत की स्वतंत्रता के उद्देश्य के प्रति जागृत किया।

ऐसे वीर विनायक दामोदर सावरकर को 1906 में लोकमान्य तिलक की अनुशंसा पर लंदन में अध्ययन के लिए पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा छात्रवृत्ति के लिए चुना गया। सावरकर 9 जून, 1906 को बम्बई बन्दरगाह से 'परसिया' नामक जहाज से लंदन के लिए रवाना हुए। लंदन के लिए सावरकर के परिजन और लोकमान्य तिलक उन्हें विदा करने आये। तिलक जी ने उनके जीवन उद्देश्य के लिए इस यात्रा को अति महत्वपूर्ण स्वीकार किया। लंदन पहुँचने पर सावरकर को श्याम जी कृष्ण वर्मा स्वयं लेने आये। उन्होंने बताया कि तिलक जी ने अपने पत्र में तुम्हारी प्रशंसा में बहुत कुछ लिखा। सावरकर ने कहा कि तिलक जी मेरे मार्गदर्शक हैं और मां भारती के लिए मैंने अपना जीवन अर्पित कर दिया है। आपका मैं बहुत आभारी हूँ। आपने मुझे यह स्वर्ण अवसर प्रदान किया है। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने पूछा ''तुम्हारा उद्देश्य बैरिस्टर बनना ही है या कुछ ओर भी?'' सावरकर ने कहा 'मेरी प्रथम अभिलाषा भारत माता को स्वतंत्र देखने की है बाकी सब बातें गौण हैं।' श्याम जी अत्यंत प्रसन्न हुए और उनसे अपनी शक्ति को दुगुनी होना बताया। इंडिया हाऊस की स्थापना लंदन में 1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने ही की थी। वे दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न करने के उद्देश्य से विदेश आये थे। उनके प्रयासों से इंडिया हाऊस राष्ट्रभक्त भारतीयों के लिए शरण स्थल था ।

फ्री इंडिया सोसायटी का गठन

लंदन पहुँचने के कुछ ही महीनों में सावरकर ने फ्री इंडिया सोसायटी

नामक संस्था का गठन किया। इसके माध्यम से सावरकर ने महान संतों व महापुरूषों की जयन्तियां आयोजित की व भारत और भारतीयता को साकार करने में जुट गए। लंदन के प्रवास के 6 माह के भीतर ही सावरकर ने इटली के महान देशभक्त मैजिनी की आत्मकथा का मराठी में अनुवाद किया। उन्होंने इस पुस्तक को लोकमान्य तिलक को समर्पित किया। यह पुस्तक भारत में प्रकाशित हुई और बहुत लोकप्रिय हुई। सावरकर को लंदन पहुँचे एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि 1907 में 1857 की क्रान्ति को घटित हुए 50 वर्ष पूरे हो गए।

इस अवसर पर अंग्रेजों ने इंग्लैंड से प्रकाशित डेली टेलीग्राफ आदि सभी समाचार पत्रों में 1857 की क्रान्ति को गदर व लूट बताकर बदनाम करने का दुष्प्रयास किया था। उन्हीं दिनों लंदन में एक नाटक प्रदर्शित किया गया जिसमें रानी लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे व नाना साहेब जैसे सुप्रतिष्ठित राष्ट्रभक्त क्रान्तिकारियों को लुटेरों के रूप में चित्रित किया गया। इन घटनाओं ने लंदन में रह रहे भारतीय युवकों के हृदय को झकझोर दिया।

इतिहास में गहरी रूचि रखने के कारण सावरकर यह बात अच्छी तरह से जानते थे कि 1857 में असंख्य भारतीयों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया था। सावरकर ने भारतीय छात्रों से सम्पर्क कर उन्हें 1857 के स्वातंत्र्य सेनानियों की पावन स्मृति में एक भव्य आयोजन करने की प्रेरणा दी। इंडिया हाऊस में एक बैठक का आयोजन करके 10 मई, 1908 को 1857 की क्रान्ति का अर्द्ध शताब्दी समारोह मनाने का संकल्प लिया।

वंदेमातरम् गूंजा

भारतीय युवकों ने गुप्त रूप से बैठकें करके इस आयोजन की रूपरेखा बनाई। मंगल पाण्डे, रानी लक्ष्मीबाई, राजा कुंवर सिंह, नाना साहेब पेशवा आदि सभी बलिदानियों के चित्रों से अंकित बैज बनवाए गए। इस समारोह के निमंत्रण पत्र आकर्षक ढंग से क्रान्तिकारियों के चित्रों सहित प्रकाशित कर वितरित किए गए। 10मई, 1908 को रविवार के दिन 1857 के स्वातंत्र्य समर का अर्द्ध शताब्दी समारोह शुरू हुआ। विशाल मंच की पृष्ठभूमि को भी क्रान्तिकारी बलिदानियों के चित्रों से सुसज्जित किया गया था। भारतीय युवकों की टोली ने वन्देमातरम् का सस्वर गायन किया।

अभिनव भारत के अध्यक्ष विनायक दामोदर सावरकर ने 1857 के संघर्ष के इतिहास पर सारगर्भित शैली में प्रकाश डाला तथा क्रान्तिकारी बलिदानियों को श्रद्धासुमन अर्पित किये तो सभागार में क्रान्ति प्रेरणा का संचार हुआ। अन्य अनेक वक्ताओं ने तर्क देकर सिद्ध किया कि 1857 का संघर्ष गदर या लूट नहीं अपितु विदेशी शासन से मुक्ति के लिए किया गया संघर्ष था। समारोह में मैडम भीखाजी कामा का प्रेरक संदेश सुनाया गया। समारोह के अन्त में प्रवासी भारतीयों में से विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों ने मंच पर आकर एक -एक करके भारत की स्वाधीनता का संकल्प दोहराया। वंदेमातरम् के गायन के साथ समारोह का समापन हुआ।

अर्द्ध शताब्दी समारोह के सक्रिय भारतीय युवक स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों से युक्त बैज लगाकर लंदन के बाजारों में घूमे। अगले दिन के इग्लैंड के सभी समाचार पत्रों में इस अर्द्ध शताब्दी समारोह के विरोध में लेख प्रकाशित कर आयोजकों के विरुद्ध राजद्रोह के आरोप में मुकदमा चलाने की मांग की गई।

"1857 सैनिक विद्रोह नहीं स्वातंत्र्य समर"

1857 के संघर्ष के विषय में अंग्रेज इतिहासकारों द्वारा निराधार व मनगढ़ंत तथ्यों के आधार राष्ट्रभक्त क्रान्तिकारी बलिदानियों को लुटेरा एवं विद्रोही बताए जाने के कारण सावरकर का चित्त-हृदय-मन बहुत उद्वेलित व व्यथित था। सावरकर ने 1857 के संघर्ष की सच्चाई जानने के लिए ब्रिटेन के अभिलेखागारों व पुस्तकालयों के महत्वपूर्ण दस्तावेजों का गहरा अध्ययन किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह एक स्वातंत्र्य समर था और इसे केवल सैनिक विद्रोह कहना निराधार भ्रामक प्रचार है और इतिहास की सच्चाई को नकारना है । अत: उन्होंने अपने गहन अध्ययन के आधार पर मराठी भाषा में ''1857 का स्वातंत्र्य समर'' नामक ग्रन्थ की रचना की। 1857 के संघर्ष की सच्चाई और स्वतंत्रता के लिए बलिदानियों की गाथायें जन-जन तक पहुंचनी चाहिए। ब्रिटिश गुप्तचर विभाग इस पाण्डुलिपि के पीछे पड़ गया। सावरकर ने इस पाण्डुलिपि को गुप्त तरीके से भारत भिजवा दिया। ब्रिटिश सरकार ने ''अभिनव भारत'' के गुप्त ठिकानों पर छापामारी भी की, क्योंकि उन्हें शक था कि यह पाण्डुलिपि इसके कार्यकर्ताओं के पास हो सकती है । क्योंकि भारत में इस ग्रंथ का प्रकाशन नहीं हो सका था, इसलिए इसकी पाण्डुलिपि को वापिस पेरिस भेज दिया गया। सावरकर को विश्वास था कि जर्मनी के छापाखाने वाले मराठी भाषा में लिखित इस ग्रंथ को छाप सकेंगें,क्योंकि वे संस्कृत भाषा से परिचित हैं। जर्मनी में अनेक स्थानों पर छापने के प्रयास किये गये किन्तु सफलता नहीं मिली। तब इग्लैंड में रहने वाले मराठी छात्रों ने इस पाण्डुलिपि का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया। ब्रिटिश गुप्तचर विभाग के सारे प्रयास विफल करते हुए इस ग्रंथ का अंग्रेजी अनुवाद हॉलैंड में छप गया। ब्रिटिश सरकार ने तुरंत इस पर प्रतिबंध लगा दिया। किन्तु इसकी हजारों प्रतियां यूरोप व भारत गुप्त तरीके से भेज दी गई। इसके बाद इस ग्रंथ का दूसरा संस्करण लाला हरदयाल और मैडम भीखा जी कामा ने प्रकाशित करवाया।

इस ऐतिहासिक ग्रंथ में सप्रमाण यह सिद्ध किया गया है कि 1857 का संघर्ष गदर, बलवा, सिपाही विद्रोह नहीं बल्कि स्वातंत्र्य समर था। निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि इस ऐतिहासिक ग्रंथ ने भारत और विश्व में 1857 के संघर्ष को स्वातंत्र्य समर के रूप में मान्यता दिलाई।

-लेखक अ.भा.इतिहास संकलन योजना, राज. क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन सह-सचिव हैं।

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023

● एस. एस. बिस्सा, आईएएस (से.नि.)

*21 दिसंबर, 2023 को भारत के इतिहास में एक नया अध्याय लिखा गया जब अंग्रेजों द्वारा बनाए गए आपराधिक विधि व प्रक्रिया से संबंधित तीन कानूनों को हटाकर इनके स्थान पर आधुनिक युग के अनुकूल और भारत के विचारों के अनुकूल तीन नए आपराधिक कानून संसद द्वारा पारित किए गए। क्या हैं इन नए कानूनों की प्रमुख बातें- इसके बारे में विशेषज्ञ **श्री एस.एस.बिस्सा** हमें क्रमशः परिचित करा रहे हैं। इस बार भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के बारे में जानकारी दी जा रही है।*

औपनिवेशिक कानूनों को समाप्त कर उनकी जगह देश की सभ्यता एवं संस्कृति तथा वर्तमान परिस्थितियों और आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए नई दंड विधियों को लागू करने के भारत सरकार के संकल्प के अन्तर्गत दूसरा बड़ा कदम है दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की जगह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता को लागू करना। किसी भी दंड विधान के क्रियान्वयन हेतु उसकी प्रक्रिया तय होना आवश्यक है । भारतीय न्याय संहिता में वर्णित अपराधों का अन्वेषण, (इन्वेस्टीगेशन) जाँच (इन्क्वायरी) और विचारण (ट्रायल) हेतु प्रक्रिया का उल्लेख भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता में किया गया है। नई संहिता में 9 धाराएं नई जोड़ी गई हैं, 9 धाराएं ही निरस्त की गई हैं तथा 160 धाराओं में परिवर्तन किया गया है । सभी परिवर्तनों का उल्लेख आलेख रूप में सम्भव नहीं हो सकता, कुछ विशेष एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन पर दृष्टिपात करना आवश्यक है ।

अपराध स्थल का निरीक्षण एवं फोरेंसिक जांच

सबसे बड़ा परिवर्तन धारा 176 से करते हुए यह प्रावधान किया गया है कि उन सभी अपराधों में जहां सजा सात वर्ष से अधिक की है उनमें पूरी अन्वेषण फोरेंसिक रिपोर्ट प्राप्त कर तदनुसार निरीक्षण किया जाना आवश्यक कर दिया गया है। यह भी कहा गया है इसके लिये फोरेंसिक विशेषज्ञ स्वयं अपराध स्थल का मौका देखकर सबूत एकत्र करेंगे। इसके लिये अपने मोबाइल फोन या अन्य इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र का उपयोग करेंगे । जिस राज्य में फोरेंसिक प्रयोगशालाएं इस तरह की नहीं हैं वे दूसरे राज्य से इस पर सहायता लें किंतु आगामी 5 वर्ष में इस स्तर की सुविधाओं की व्यवस्था स्वयं राज्य करेंगे ।

इलेक्ट्रॉनिक्स साधनों का प्रयोग : भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 530 में प्रावधान किया गया है कि न्यायालयों में सभी आपराधिक विचारण (ट्रायल) जांच, और अन्य प्रक्रिया इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के माध्यम से होगी। इसमें सम्मन जारी करना, बयान लेना, गवाही की प्रक्रिया शामिल होगी ।इसके लिये श्रव्य, दृश्य (ऑडियो विजुअल) संवाद व्यवस्था का उपयोग होगा और ऐसी सभी प्रक्रियाएं न्यायालयों में स्वीकार्य होंगी ।

फरार अपराधी की अनुपस्थिति में निर्णय

अपराध के दंड से बचने के तरीके अपनाने वाले फरार अपराधियों द्वारा न्यायिक प्रक्रिया में बाधा डालने और विलंब करने को नियंत्रित करते हुए धारा 356 में प्रावधान किया गया है कि इस तरह के फरार अपराधी जिनके जल्दी गिरफ्तार होने की संभावना नहीं है उनके विरूद्ध आपराधिक विचारण कार्यवाही उनकी अनुपस्थिति में भी की जा सकेगी और निर्णय भी दिया जा सकेगा। ऐसे प्रावधान के कारण अपराधी न्यायिक प्रक्रिया से बचने के लिये फरार होने से रूकेंगे क्योंकि यदि उनकी अनुपस्थिति में निर्णय होगा तो उनको अपने बचाव में कहने का अवसर भी जाता रहेगा ।

अंगुली की छाप और आवाज का नमूना लेना

वर्तमान में दंड प्रक्रिया संहिता में व्यवस्था है कि मजिस्ट्रेट किसी व्यक्ति को नमूने के हस्ताक्षर और हस्तलेख देने को आदेशित कर सकते हैं । भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 349 में इसे विस्तृत करते हुए यह भी अधिकार दिया गया है कि अब उनका अंगुली छाप और आवाज नमूना (फिंगर प्रिंट एवं वॉइस सैंपल) भी लिये जा सकेंगे और ऐसे नमूने उस व्यक्ति से भी लिए जा सकेंगे, जिसे अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है ।

महिलाओं के बयान महिला मजिस्ट्रेट द्वारा

महिलाओं के विरुद्ध यौन अपराधों की सुनवाई के समय ऐसी महिलाओं के साथ कार्यालयों, न्यायालयों में हुई अनुचित घटनाओं को नियंत्रित करने को दृष्टिगत रखते हुए धारा 183 (6) (अ) में प्रावधान किया गया है कि न्याय संहिता की धारा 64 से 71, 74 से 79 (सभी धाराएं बलात्कार, महिलाओं का पीछा करना (स्टाकिंग) मेल आदि से संदेश भेजना, निरंतर देखते फोटो खींचना (वायेरिजम) आदि से सम्बन्धित है तथा धारा 124 एसिड हमला पर विचारण करते हुए महिला के बयान महिला मजिस्ट्रेट द्वारा ही लिये जायेंगे। महिला मजिस्ट्रेट उपलब्ध न होने की स्थिति में पुरूष मजिस्ट्रेट किसी दूसरी महिला की उपस्थिति में ही बयान ले सकेंगे। यह भी प्रावधान किया गया है कि ऐसे बयान में मजिस्ट्रेट बिल्कुल विलंब न कर जैसे ही पुलिस से ऐसी

सुरक्षा सुनिश्चित

नए आपराधिक कानून समाज के गरीबों, वंचितों, और कमजोर वर्गों के लिए बढ़ी हुई सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं और संगठित अपराध, आतंकवाद तथा ऐसे अन्य अपराधों पर कड़ा प्रहार करते हैं।... ये विधेयक हमारे कानून, पुलिस और जांच प्रणालियों को प्रौद्योगिकी युग में लाने वाले हैं।-**प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी**

सूचना आए तुरन्त कार्यवाही की जाए।

अपराध द्वारा अर्जित संपति की जप्ती

धारा 107 में प्रावधान किया गया है कि यदि अपराध के अन्वेषण के दौरान पुलिस को निश्चित ज्ञात होता है कि अपराधी द्वारा संपत्ति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तरीके से आपराधिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप अर्जित की गई है तो पुलिस अधीक्षक की अनुमति से न्यायालय से ऐसी संपत्ति जब्त करने का निवेदन किया जा सकेगा। पुलिस / न्यायालय का कुछ अधिकार पूर्व में भी था, अब इसे अचल सम्पत्ति तक बढ़ा दिया गया है। यह भी प्रावधान है कि न्यायालय द्वारा जिला मजिस्ट्रेट को आदेशित किया जाए कि जब्त सम्पत्ति की आय को अपराध से प्रभावित हुए व्यक्ति में वितरित किया जाए।

समयबद्ध कार्यवाही

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता में एक महत्वपूर्ण प्रावधान विभिन्न न्यायिक प्रक्रियाओं में समयबद्ध व्यवस्था का किया गया है । ऐसा कुल 35 मामलों में किया गया है जो अलग अलग धाराओं के साथ प्रावधित हैं। उदाहरणार्थ अब इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस से प्राप्त होने वाली एफआईआर को तीन दिन में रिकॉर्ड पर लेना आवश्यक होगा। प्रथम सुनवाई से 60 दिन में चार्ज फ्रेम करने होंगे, विचारण पूर्ण होने पर निर्णय 45 दिन में सुनाना होगा, लोक सेवक के विरूद्ध कार्यवाही हेतु सरकार को 120 दिन में स्वीकृति देनी होगी, लोक न्यूसेंस की कार्यवाही 90 दिन में पूर्ण करनी होगी। इससे न्यायिक कार्य में विलंब से होने वाली समस्या से आमजन को छुटकारा मिल सकेगा ।

हथकड़ी लगाना

माननीय सर्वोच्च न्यायालय एवं मानवाधिकार आयोगों के हथकड़ी के प्रयोग को नियंत्रित करने के आदेशों से पुलिस को होने वाली परेशानी एवं बढ़ती फरारी की घटनाओं को दृष्टिगत रखते हुए धारा 43 में व्यवस्था की गई है कि अब पुलिस आदतन अपराधी, फरार अपराधी, बलात्कारी, संगठित अपराधों जैसे ड्रग अपराधों में लिप्त आदि व्यक्तियों को न्यायालय की अनुमति के बिना हथकड़ी लगा सकेगी ।

डॉक्टर की गवाही ऑडियो-वीडियो द्वारा

धारा 336 में लोक सेवकों की परेशानी को ध्यान में रखते हुए प्रावधान किया गया है कि अब सेवानिवृत्त, स्थानान्तरित अधिकारियों के बयान हेतु उनके पश्चात् पदस्थापित अधिकारी के बयान लिये जा सकेंगे। मृत अधिकारी के संदर्भ में भी ऐसा ही होगा। यदि रिपोर्ट विवादित नहीं है तो कोई भी अधिकारी, विशेषत: डॉक्टर तब तक न्यायालय में गवाही हेतु नहीं बुलाया जाएगा, ऐसे व्यक्ति ऑडियो-वीडियो संसाधन से भी अपनी गवाही दे सकेंगे ।

गिरफ्तारी संबंधी प्रावधान

धारा 37 (7) में प्रावधान किया गया है कि यदि अपराध 3 वर्ष से कम की सजा का है तो 60 साल से अधिक के अथवा अशक्त किसी भी अधिकारी को पुलिस द्वारा उप अधीक्षक पुलिस की अनुमति के बिना गिरफ्तार नहीं किया जाएगा ।

गवाह सुरक्षा योजना

निष्पक्ष और स्वतंत्र निर्भीक गवाही व्यवस्था हेतु धारा 398 में प्रावधान किया गया है कि राज्य सरकारों द्वारा गवाह सुरक्षा योजना का प्रारम्भ किया जाएगा।

विश्वास है कि केन्द्र सरकार के इस तरह के क्रांतिकारी परिवर्तनों से आपराधिक न्याय प्रशासन की व्यवस्थाएं सुधरेंगी, आमजन का राज्य व्यवस्था के प्रति विश्वास बढ़ेगा और सुशासन का संकल्प पूर्ण होगा ।

-ऑनरेरी सीनियर फैलो, प्रबन्ध अध्ययन केन्द्र, एचसीएम रीपा, जयपुर

चिंतन के स्वर

किस चीज ने हमारे राष्ट्रवादियों को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने के लिए प्रेरित किया था? क्या सांसारिक राजनीतिक शक्ति की इच्छा ने इतने महान पुरुषों और महिलाओं को ब्रिटिश क्रूरता के समक्ष अपनी जान जोखिम में डालने के लिए विवश किया था?

सूक्ष्म रूप से पड़ताल करें तो पता चलता है कि हमारी धरती पर आक्रमणकारियों के प्रवेश के बाद जिस चिनगारी ने देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग संघर्षों और अभियानों को जन्म दिया, वह 'स्व' (स्वत्व) की रक्षा करने के हमारे प्रयासों का हिस्सा थे, जिसे विदेशी आक्रांताओं द्वारा कुचला जा रहा था। स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक और आर्थिक दमन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हमारा संघर्ष नहीं था, बल्कि यह हमारे 'स्वत्व' और हमारी वास्तविक पहचान को बहाल करने का संघर्ष था।

हम अपने नायकों के योगदान का पता लगाकर उन्हें मान्यता प्रदान करें और अतीत तथा स्वत्व के बारे में प्रकट होने वाले सत्य को समझने के लिए अपने दृष्टिकोण को बदलें।

(जे. नंदकुमार द्वारा लिखित पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वत्व के लिए संघर्ष' से उद्धृत)

संघ ने कभी भी आरक्षण का विरोध नहीं किया

सोशल मीडिया पर फेक वीडियो से रहें सावधान

▪ *जितेश जेठानंदानी*

एक वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रसारित किया जा रहा है जिसमें दावा किया जा रहा है कि 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आरक्षण के खिलाफ है..' हमारी पड़ताल में पता चला कि ये वीडियो फेक है...संघ ने कभी ऐसा कहा ही नहीं। चलिए जानते है संघ ने आरक्षण को लेकर बीते 9 सालों में कब क्या-क्या कहा-

▪ 17 दिसंबर, 2015 को संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा था कि जब तक सामाजिक भेदभाव है आरक्षण चलता रहेगा। आरएसएस आरक्षण के समर्थन में है।

▪ 20 जनवरी, 2017 को संघ के तत्कालीन सह सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य ने कहा कि भारत में पिछड़ी जातियों के संदर्भ में आरक्षण आया है। सैकड़ों साल तक इस समाज के लोगों को सुविधाओं और शिक्षा से वंचित रखा गया, ऐसा उनके साथ गलत हुआ है। उनको समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए आरक्षण को शुरू किया गया।

▪ 21 जनवरी, 2017 को संघ के तब के सह सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि संघ का मत स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति, जनजाति और ओबीसी के लिए संविधान प्रदत्त आरक्षण जारी रहना चाहिए क्योंकि उसकी आवश्यकता आज भी है। उसको पूर्ण रूप से लागू करना चाहिए।

▪ 11 अक्टूबर, 2018 को डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि, सामाजिक विषमता को हटा कर समाज में सबके लिए अवसरों की बराबरी प्राप्त हो इसलिए सामाजिक आरक्षण का प्रावधान संविधान में किया गया है। संविधान सम्मत सभी आरक्षणों को संघ का पूरा समर्थन है और रहेगा।

▪ 14 अगस्त, 2019 को डॉ. भागवत ने कहा कि जो लोग आरक्षण के पक्ष में हैं और जो इसके खिलाफ हैं, उन्हें सौहार्द्रपूर्ण माहौल में इस पर विचार विमर्श करना चाहिए।

▪ अगस्त 2021 को वर्तमान सरकार्यवाह दत्तात्रेय जी होसबाले ने अपने एक बयान में कहा था कि संघ आरक्षण का 'पुरजोर समर्थक' है और जब तक समाज का एक खास वर्ग 'असमानता' का अनुभव करता है, तब तक आरक्षण जारी रखा जाना चाहिए।

संघ के सरसंघचालक की ओर से कई अवसरों पर इस बात पर फोकस किया गया है कि समाज में भेदभाव समाप्त होने तक आरक्षण जारी रहना चाहिए। इस बात का जिक्र उन्होंने 7 सितम्बर, 2023 को भी किया था। तेलंगाना में 28 अप्रैल, 2024 को दिए अपने बयान में भागवत जी ने कहा कि कई अवसर ऐसे आते हैं जब बयानों को तोड़-मरोड़ के पेश किया जाता है। संविधान सम्मत आरक्षण को संघ अपना समर्थन देता रहा है और संघ यही कहता है कि जब तक भेदभाव समाज में है तब तक आरक्षण जारी रहना चाहिए।

-लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

मुसलमानों को आरक्षण क्यों चाहिए ?

▪ *सुरेन्द्र चतुर्वेदी*

मुसलमानों को आरक्षण क्यों चाहिए ? आधार क्या है? भारत के संविधान निर्माताओं ने मुसलमानों के आरक्षण की व्यवस्था क्यों नहीं की ? क्या उनको नहीं पता था कि मुसलमान गरीब और आर्थिक रूप से पिछड़े हैं? और अगर मुसलमानों को यह लगता है कि संविधान निर्माताओं को नहीं पता था, तो वो उस समय नए नए बने पाकिस्तान में क्यों नहीं गए ? जहां उनको लगता था कि वो हिन्दुओं द्वारा किए जा रहे कथित अत्याचार और सह अस्तित्व के सिद्धांत से अलग होकर अपने जीवन को खुशहाल बना सकते थे और अपनी पीढ़ियों को सुरक्षित रख सकते थे।

मुस्लिम आबादी का स्थानांतरण तो भारत के विभाजन के पश्चात् लगभग 25 वर्ष तक होता रहा। तब इस समाज को यह क्यों नहीं लगा कि भारत में उन्हें वह सुविधाएं नहीं मिल रही जो यहां के पिछड़े और वंचित वर्ग को मिल रही हैं।

दरअसल, सारी कहानी वोट बैंक की है। जो राजनीतिक दल मुस्लिम समुदाय को आरक्षण देने की बात कर रहे हैं, उनको सिर्फ सत्ता में वापसी चाहिए। उनको मुस्लिम समुदाय के विकास और समृद्धशील होने से कोई मतलब नहीं है। आजादी के 75 वर्ष बाद भी विभिन्न इस्लामी संस्थाएं अपने फतवे जारी करती हैं और मस्जिदों में बैठे मौलवी और उलेमा उन फतवों को लागू करने पर जोर देते हैं।

यह सब आम मुस्लिम मतदाता को मानसिक गुलामी में बांधे रखने की कोशिश के अलावा और कुछ नहीं है। इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण मदरसा शिक्षा व्यवस्था है जो मुस्लिम समाज के बड़े वर्ग को शेष समाज से ना केवल समरस होने से रोकता है अपितु अपनी अलग पहचान को बनाए रखने और अलगाववाद की शिक्षा भी देता है। इन मौलवियों और उलेमाओं द्वारा दी जा रही यह शिक्षा ही इस समाज के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण है। सच यह है कि जिन लोगों को यह वर्ग हिन्दू समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव से छुटकारा दिलाने के नाम पर मुसलमान बना लेता है, उन लोगों को इस्लाम जगत इस भेदभाव से छुटकारा

बरगद एक लगाइए, पीपल रोपें पाँच
घर-घर नीम लगाइए, यही पुरातन साँच

▪ *राजकुमार सोनी*

शास्त्रों में एक दोहा आता है ''पीपल पूजन मैं गई-अपने पीव के काज,पीपल पूजा हरि मिले-एक पंथ दो काज''

अर्थात् अपने पति की लम्बी आयु और निरोगी काया के लिए पीपल की पूजा करने गई थी वहां मुझे पीपल पूजते समय भगवान विष्णु के दर्शन भी हुए।

हिमाचल मंदिर में बुजुर्ग संत से हुई ज्ञान चर्चा में उनके श्रीमुख से निकला यह दोहा-

बरगद एक लगाइए,पीपल रोपें पाँच।
घर-घर नीम लगाइए,यही पुरातन साँच।।

पिछले करीब-करीब 40-50 सालों से लोगों ने पीपल,बरगद और नीम के पेडों को लगाना बंद कर दिया है। विशेषकर युवा पीढ़ी तो इनके गुणों को जानती ही नहीं, और तो और सरकारी स्तर पर भी वन विभाग या अन्य विभागों ने आजकल नीम, बरगद और पीपल लगाना तो छोड़ ही दिया है।

पीपल कार्बन डाईऑक्साइड का 100 प्रतिशत सोखता है, बरगद 80 प्रतिशत और नीम 75 प्रतिशत। लेकिन इसके बदले लोगों ने घर के बाहर या आसपास खूबसूरती बढ़ाने के लिए विदेशी यूकेलिप्टस को लगाना शुरू कर दिया, जो जमीन को जल विहीन कर देता है। आज हर जगह यूकेलिप्टस,गुलमोहर और अन्य सजावटी पेड़ों ने ले ली है।

अब जब वायुमण्डल में रिफ्रेशर (वातावरण को स्वच्छ करने वाले पेड़) ही नहीं रहेंगे तो गर्मी तो बढ़ेगी ही। जब गर्मी बढ़ेगी तो जल भाप बनकर उड़ेगा ही। हर 500 मीटर की दूरी पर एक पीपल का पेड़ लगायें तो आने वाले कुछ साल में ही भारत प्रदूषण मुक्त हो सकता है। पीपल के पत्ते का फलक अधिक और डंठल पतला होता है। जिसकी वजह से शांत मौसम में भी पत्ते हिलते रहते हैं और स्वच्छ ऑक्सीजन देते रहते हैं। वैसे भी पीपल को वृक्षों का राजा कहते है। इसकी वंदना में एक श्लोक देखिए-

मूलम् ब्रह्मा, त्वचा विष्णु,सखा शंकरमेवच।
पत्रे-पत्रेका सर्वदेवानाम,वृक्षराज नमस्तुते।।

नीम का पेड़ भी बहुत गुणकारी है। नीम में एंटीबैक्टीरियल,एंटीफंगल, एंटीवायरल और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं। औषधीय गुणों से भरपूर नीम की कोपलों और पत्तों के सेवन से (वैद्य से परामर्श करें, क्योंकि हर व्यक्ति के शरीर की तासीर अलग-अलग होती है) और नीम का दातुन करने से दंत विकार दूर होने के साथ-साथ खून भी साफ होता है और शुगर को भी शरीर में होने से रोकने में कारगर सिद्ध होती है।

ज्योतिष में कहा गया है कि नीम की पूजा करने से शरीर में मंगल का दोष दूर होता है। नीम को मंगल देव और हनुमान जी का पेड़ माना जाता है।

बरगद की छाल, फल, बीज और दूध से कफ, वात, पित्त दोष को ठीक करने के अलावा नाक,कान या बालों की समस्या के इलाज में उपयोग किया जाता है। शास्त्रों में जिक्र आया है कि बरगद के पेड़ में जगत के पालनहार विष्णु,भगवान शिव और भगवान ब्रह्मा का वास होता है, इसकी उम्र 300 से लेकर ढाई हजार साल तक होती है।

जीवन में एक वृक्ष लगाएं।
धरती मां का कर्ज चुकाएं।।

पहले एक परंपरा यह थी कि जन्म, विवाह और मृत्यु के समय मनुष्य इन मौकों पर पेड़ जरूर लगाता था। परंतु अब यह परंपरा भी धीरे-धीरे लुप्त हो रही है, आओ हम सब मिलकर इस परंपरा को पुनर्जीवित करें और ज्यादा से ज्यादा पेड़ (पीपल,नीम,बरगद के अलावा फलदार वृक्ष) लगाकर इस धरती को प्रदूषण और गर्मी से मुक्ति दिलाएं तथा अपने क्षेत्र को हरा-भरा व स्वच्छ बनाएं।

-श्रीगंगानगर

→ नहीं दिला पाता। जातिगत भेदभाव वहां पर भी जारी है। वो लोग वापस अपने मूल धर्म में ना लौट जाएं, इसलिए मुस्लिमों को आरक्षण का लाभ दिलाने की बात कही जा रही है। 2024 के आम चुनावों में एक बार फिर मुसलमानों को आरक्षण देने की वकालत सारा विपक्ष कर रहा है। संविधान के अनुसार तो धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं दिया जा सकता, लेकिन कांग्रेस ने चोर दरवाजे से मुस्लिमों को अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल कर दिया। इससे दो बातें हुई, एक तो संविधान की मूल भावना को वोटों के लालच में मार दिया गया और दूसरा, हिन्दू समाज के अन्य पिछड़ा वर्ग में जो जातियां हैं, उनकी हिस्सेदारी पर भी डाका डाला गया।

जरूरत इस बात की है कि मुस्लिमों को आरक्षण देने की मांग का हर स्तर पर प्रतिकार किए जाने की आवश्यकता है। अन्यथा ना केवल भारत में हिन्दुत्व कमजोर होगा अपितु भारत में रहने वाले अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रति भी अन्याय ही होगा।

-सेंटर फॉर मीडिया रिसर्च एंड डवलपमेंट, जयपुर

बांसवाड़ा जिले का सबसे बड़ा मेला

पाण्डवों की तपस्थली रही है घोटिया आम्बा तीर्थ

■ *सुधीर पाटीदार*

राजस्थान के बांसवाड़ा जिला मुख्यालय से 35 किमी दूर स्थित (ग्राम पंचायत बारीगामा) घोटिया आम्बा तीर्थ पौराणिक काल से ऋषि-मुनियों की तपस्थली रहा है। अरावली पर्वतमालाओं में फैला यह वन्य क्षेत्र आज भी अपनी ऊर्जा, ओज और अध्यात्म की धारा प्रवाहित कर रहा है। जनश्रुति के अनुसार महाभारतकाल में पाण्डवों ने अज्ञातवास इसी क्षेत्र में बिताया था। उस समय शौनक आदि 88 हजार ऋषियों के यहां आने से पाण्डव धर्म संकट में आ गये। अतिथियों को भोजन नहीं करा पाने से दु:खी द्रौपदी ने श्रीकृष्ण को याद किया। कहते हैं कि उस समय श्रीकृष्ण ने यहां शेष बची आम की एक गुठली से पूरा फलदायी वृक्ष उत्पन्न कर और अन्न के एक दाने से क्विंटलों फसल तैयार कर ऋषियों को भोजन कराने में पाण्डवों की मदद की।

वागड़ी में गुठली को घोटी और आम को आम्बा कहते हैं, तभी से इस स्थान का नाम 'घोटिया आम्बा' पड़ा।

वर्तमान में यहां घोटेश्वर महादेव का भव्य मंदिर बना हुआ है। पहाड़ों से रिसते पानी का यहां एक पवित्र कुण्ड बना हुआ है। कहा जाता है कि ऋषियों की प्यास बुझाने के लिए महाबली भीम ने इस स्थान पर गदा प्रहार किया तो मीठे पानी की जलधार निकली जिसे कुण्ड का स्वरुप दिया गया। इस कुण्ड के पानी से स्नान करने पर चर्म रोग ठीक हो जाता है। विशेषकर किसान वर्ग अपने पशुधन की सुरक्षा एवं सुस्वास्थ्य को लेकर यहां मन्नत मानते हैं। घोटेश्वर महादेव मंदिर में पांचों पाण्डवों, माता कुन्ती एवं द्रौपदी की श्वेतवर्णी प्रतिमाएं भी स्थापित हैं।

प्रतिवर्ष चैत्र माह की अमावस्या को यहाँ विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। यह बांसवाड़ा जिले का सबसे बड़ा मेला है। इसमें राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु शामिल होते हैं। लगभग पांच किलोमीटर की परिधि में लगने वाले मेला स्थल पर मनोरंजन के लिए विशालकाय झूले लगाये जाते हैं। पारम्परिक वाद्य यंत्रों सहित कई सामग्री बड़ी संख्या में बेची जाती है। लोक कलाकारों के द्वारा रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम में दी जाने वाली प्रस्तुतियां मेलार्थियों का मन मोह लेती हैं। मेले में खेल प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं।

रबी की फसल कटने के बाद किसानों के चेहरे पर खुशी छाई रहती है ऐसे में जनजाति अंचल में खरीददारी और मनोरंजन के लिए यह मेला नई ऊर्जा देने वाला है। ■

–खण्ड प्रचार प्रमुख, बागीदौरा, बांसवाड़ा

धानक्या

पंडित जी मात्र व्यक्ति नहीं विचार थे : मनोज कुमार

एकात्म मानव दर्शन के 60 वर्ष पूर्ण होने पर धानक्या में गोष्ठी का आयोजन

एकात्म मानव दर्शन के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में पंडित दीनदयाल जी के जीवन व उनके द्वारा दिए गए दर्शन को जानने हेतु बीती 28 अप्रैल को धानक्या में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जानकारी हो कि धानक्या वह स्थान है जहां महान दार्शनिक पंडित दीनदयाल उपाध्याय का बचपन बीता था और अब वहां उनका राष्ट्रीय स्मारक बना हुआ है। उल्लेखनीय है कि एकात्म मानव दर्शन दीनदयाल जी ने 22 से 25 अप्रैल,1965 को मुम्बई में दिए गए चार व्याख्यानों में प्रस्तुत किया था।

जयपुर के विभिन्न सामाजिक समूहों मनसंचार, यूथ पल्स, यू थिंक, विचार शक्ति, विचार अमृत, इग्नाइट थॉट्स और

सोशल थिंकर्स के लगभग 50 युवक-युवतियों ने आयोजित संवाद सत्र में भाग लिया। इस अवसर पर अ.भा.साहित्य परिषद के श्री मनोज कुमार ने युवाओं से वार्ता करते हुए कहा कि यह वही विचार है, जो आदिगुरु शंकराचार्य ने अद्वैत के माध्यम से समझाया था व महर्षि अरविन्द ने जिसकी आध्यात्मिक व्याख्या की थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने उसी को सरल रूप में समाज के सामने प्रस्तुत किया। राजनीति में किस प्रकार एकात्मता का ध्यान रखना चाहिए यह भी उन्होंने बताया। उन्होंने कहा, वास्तव में पंडित जी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचार थे। विचार जिसमें हमेशा व्यष्टि से परमेष्टि तक का चिंतन रहा।

संवाद सत्र में डॉ. सुभाष कौशिक व एडवोकेट देवेश बंसल ने युवाओं से संवाद स्थापित करते हुए कहा कि साम्यवाद व पूंजीवाद से परे भारत का एकात्म मानव दर्शन इस विचार पर बल देता है कि अकेले व्यक्ति के विकास से विकास संभव नहीं है। भारत ने हमेशा ही चराचर जगत की चिंता की है।

अलवर

बीमारी ठीक करने के नाम पर मिशनरीज खेल रहे हैं मतांतरण का खेल

ईसाई मिशनरियों द्वारा चंगाई सभा की आड़ में भोले-भाले लोगों का सामूहिक धर्मांतरण किया जाना आम बात हो गई है। दरअसल ये मिशनरीज आर्थिक रूप से कमजोर और पिछड़े क्षेत्र में रहने वाले लोगों को बीमारी ठीक करने के नाम पर चंगाई सभा (स्वस्थ करने के लिए प्रार्थना) में बुलाते हैं। इस दौरान वे उनसे यीशू के समक्ष प्रार्थना करवाते हैं जिसे यीशू चंगाई सभा या हीलिंग मीटिंग कहा जाता है। यहीं पर उन्हें रुपया, नौकरी, राशन व आवास आदि का लालच दिया जाता है। बीमारी के नाम पर इनका ब्रेनवाश कर धर्म परिवर्तन का दबाव बनाया जाता है। मिशनरीज अक्सर ऐसी सभाओं का आयोजन दूर-दराज के जंगल या घरों के बेसमेंट में करते हैं।

ताजा मामला प्रदेश के अलवर जिले का है, जहां एक जानकारी के अनुसार पिछले कुछ समय से 300 से ज्यादा लोगों का धर्म परिवर्तन कराया गया है। एक दैनिक समाचार पत्र के अनुसार इस काम में अलवर के स्थानीय निवासी जिन्होंने अब ईसाई धर्म अपना लिया है, वे डेरी, सांखला, कैमासा, खैरथल, बड़ौदामेव, राता कलां आदि स्थानों पर जाकर धर्म परिवर्तन के लिए चंगाई सभाएं करते हैं। एक जानकारी यह भी सामने आई है कि मिशनरियों को विदेश से बड़ी संख्या में धन उपलब्ध करवाया जा रहा है ताकि धर्मांतरण का कार्य और तेज गति से हो सके।

ये पंजाब और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में सक्रिय हैं। अलवर में भी इन्हीं का नेटवर्क बताया जा रहा है।

तिजारा

सरकारी नौकरी और 5 लाख रुपये का झांसा देकर किया धर्म परिवर्तन

हिंदू धर्म के प्रति घृणा पैदा कर धर्म परिवर्तन कराने के मामले आए दिन सामने आ रहे हैं। येन-केन प्रकारेण ये लोग दूसरे धर्म को मानने वाले लोगों को अपने धर्म में लाने की साजिश रचते रहते हैं। समाज है कि अब भी जागरूक नहीं हो रहा जिससे जिहादियों के हौंसले दिनों-दिन बढ़ते ही जा रहे हैं।

ताजा मामला अलवर के तिजारा का है, जहां एक मजदूर वर्ग से आने वाली महिला और उसके दोनों बच्चों का यह कहकर धर्म परिवर्तन किया गया कि यदि इस्लाम अपनाते हो तो उन्हें 5 लाख रुपये, सरकारी नौकरी और प्रतिमाह 5 हजार रुपये दिए जायेंगे।

धर्मांतरित मंजू के ससुर नंदलाल जाटव ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि उनकी बहू स्थानीय मसाला फैक्ट्री में काम करती है। यह फैक्ट्री इंतजार खान की हैं जो इसकी आड़ में गरीब लोगों को लालच देकर धर्म परिवर्तन करने का काम करता है। मंजू के साथ भी उसने वही किया। मंजू जब उसके झांसे में आ गई तो वह अपने दोनों बेटों को भी तिजारा की मस्जिद में ले गई जहाँ दो मौलवियों ने बच्चों को मुस्लिम धर्म की शिक्षा पढ़ाई।

फिलहाल तिजारा डीएसपी शिवराज सिंह के अनुसार आरोपी को हिरासत में लेकर गंभीरता से पूछताछ की जा रही है।

नाणा (बाली)

जान से मारने की धमकी देकर मौलवी ने किया युवती से दुष्कर्म

मुल्ला-मौलवियों ने अपने धार्मिक स्थल को अपवित्र करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। ताजा घटनाक्रम बाली उपखण्ड के अंतर्गत आने वाले नाणा थाने का है, जहां मस्जिद के मौलवी गनी मोहम्मद ने बीती 3 मई को 19 वर्षीय युवती को मस्जिद में काम के बहाने से बुलाया और परिसर में बने कमरे में ले जाकर जान से मारने की धमकी देकर दुष्कर्म किया। रात तक युवती घर नहीं लौटी तो परिजन आरोपी तक पहुंचे तब तक वह फरार चुका था। मौलवी पीड़िता के घर प्रतिदिन इस्लामी तालीम (शिक्षा) देने जाया करता था।

उदयपुर

कोचिंग की आड़ में कन्वर्जन का धंधा

लालच और धोखे से धर्मांतरण के मामले आए दिन सुनने और पढ़ने को मिलते रहते हैं। ताजा मामला उदयपुर के भूपालपुरा क्षेत्र के पन्ना विहार का है। यहाँ कोचिंग संस्थान की आड़ में युवक-युवतियों को ईसाई बनाने का धंधा चल रहा था।

जैसे ही यह जानकारी क्षेत्रवासियों को मिली, वे बड़ी संख्या में संस्थान के पास एकत्रित हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने संस्थान संचालक डेविड देसाई व अनिता देसाई (दोनों ईसाई) सहित 18 लोगों को गिरफ्तार किया। जानकारी में आया है कि एक वर्ष से कोचिंग संस्थान भवन की ऊपरी मंजिल पर चल रहा था, जहां कमरों के अंदर ईसाई समुदाय से जुड़े संदेश और पोस्टर लगे थे। लोगों को इसकी जानकारी नहीं हो, इसके लिए खिड़कियों को काले रंग के कपड़ों से ढका गया था, यहीं पर ईसाई बनने का पाठ पढ़ाया जा रहा था। सेंटर से प्रत्येक शनिवार और रविवार को प्रात: 4 से 5 बजे के बीच ईसाई धर्म में होने वाली प्रार्थनाओं की आवाजें सुनाई देती थी।

इटावा (कोटा)

घूमंतू समाज की बेटी का स्वयंसेवकों ने किया कन्यादान

बीती 3 मई को इटावा (कोटा) में रहने वाले बाबूलाल गाड़िया लोहार की बेटी पूजा का विवाह संपन्न हुआ। सामाजिक समरसता का संदेश देते हुए संघ के कार्यकर्ताओं ने कन्यादान किया। बारातियों का स्वागत कर भोजन व्यवस्था संभाली और बाद में गाड़िया लोहार समाज के साथ भोजन किया। स्वयंसेवकों के सहयोग से नव-दम्पत्ति को गृहस्थी के बर्तन, कपड़े इत्यादि सहित 5100 रुपये दिए गए। जिला संघचालक गोपाल मीणा ने कहा कि विमुक्त, घुमंतू, अर्द्धघुमंतू, जनजाति समाज को मुख्यधारा में लाना आवश्यक है। हमारा उद्देश्य घुमंतू समाज के लोगों के उत्थान, कल्याण, विकास एवं उनकी समस्याओं के लिए कार्य करना है।

जानकारी हो कि घुमंतू समाज के पूर्वज चित्तौड़ शासकों के सहयोगी के रूप में लुहारी का काम करते थे। 16वीं शताब्दी तक ये मेवाड़ राज्य का हिस्सा थे और सामान्य जीवन जी रहे थे। लेकिन 1568

में चित्तौड़ पर अकबर के हमले के बाद ये लोग यहाँ से निकल गए और प्रतिज्ञा की कि जब तक चित्तौड़ पुराने वैभव को प्राप्त नहीं कर लेगा हम घर बनाकर नहीं रहेंगे, पलंग पर नहीं सोएंगे। तब से ही ये आज भी अपनी गाड़ियों में ही जीवन यापन कर रहे हैं। इसीलिए इन्हें गाड़िया लोहार कहा जाता है। ये लोहे का सामान बनाने में कुशल होते हैं। महाराणा सांगा के समय सेना के लिए हथियार बनाना व उनकी मरम्मत करना इनका काम था। बाद में जब अंग्रेजों ने बिना लाइसेंस शस्त्रों को रखने पर प्रतिबंध लगा दिया, तब से कृषि उपकरण व घरेलू उपयोग की वस्तुएं जैसे कुल्हाड़ी, फावड़ा, तगारी, तवा, कढ़ाई, चिमटा, बाल्टी, गेट आदि बनाने लगे।

जयपुर

नारायण दर्शन यात्रा

घुमंतू बस्तियों में संतों ने दिया समरसता का संदेश

एक जाजम पर बैठक कर की धर्म चर्चा

संघ के सेवा विभाग द्वारा छुआछूत और अस्पृश्यता के विरुद्ध सेवा बस्तियों में संत दर्शन, सामाजिक समरसता और भाईचारे की भावना जागृत करने के उद्देश्य से नारायण दर्शन यात्रा के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

बीती 25 अप्रैल से 10 मई तक इस अभियान के अंतर्गत जयपुर प्रांत की 1080 सेवा बस्तियों में कार्यक्रम करने की योजना बनी। शुरुआत जयपुर के करधनी नगर स्थित बंजारा बस्ती से हुई। झोटवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र स्थित लुहार बस्ती में स्थानीय कार्यकर्ताओं ने भजन-कीर्तन करते हुए लुहार बस्ती की परिक्रमा की और लुहार समाज के साथ एक जाजम पर बैठ धर्म चर्चा की। इसके बाद मुरलीपुरा, दादी का फाटक सहित अन्य स्थानों पर यह यात्रा निकाली गई। सियारामदास की बगीची के महंत हरिशंकर वेदांती सहित अन्य संतों-महंतों ने बस्ती वासियों के साथ चर्चा की। बस्ती वासियों ने संतों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। सभी ने एक-दूसरे के हाथों से प्रसाद ग्रहण किया। सेवा विभाग, जयपुर महानगर प्रमुख धर्मगुरु श्री राजेन्द्र त्रिवेदी ने बताया कि वर्ष 2017 से नारायण दर्शन यात्रा की शुरुआत हुई थी, तब से यह यात्रा प्रतिवर्ष आयोजित की जा रही है। जयपुर महानगर की 258 सेवा बस्तियों में से 120 बस्तियों में कार्यक्रम हो चुके हैं।

वंचित समाज के चार संन्यासियों को महामंडलेश्वर पद का पट्टाभिषेक कराया गया

बीती 30 अप्रैल को जूना अखाड़ा द्वारा चार संतों को महामंडलेश्वर पद का पट्टाभिषेक कराया गया। ये सभी अनुसूचित जाति व जनजाति समाज से आते हैं। जानकारी हो कि महामंडलेश्वर का पद प्राप्त करने के लिए जूना अखाड़े द्वारा पांच वर्षों तक सनातन धर्म ग्रंथों का गहन अध्ययन करने के पश्चात् परीक्षा पास करनी होती है। इसके बाद ही उन्हें महामंडलेश्वर की उपाधि प्राप्त हो पाती है। अभी तक जूना अखाड़ा द्वारा अनेक अनुसूचित जाति, जनजाति समाज के संत और यहाँ तक कि किन्नर समाज से भी महामंडलेश्वर बनाए गए हैं। उनको अब सम्मान और आदर से देखा जाता है।

गुजरात में आयोजित इस कार्यक्रम के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार ने कहा कि जूना अखाड़ा देश के बड़े अखाड़ों में से है। (इसके पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी जी महाराज हैं) जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर तपस्वी हैं, गहरा अध्ययन करते हैं और समाज में अपने पुरुषार्थ से सद्गुण, समरसता और संगठन के लिए समर्पित हैं। उन्होंने कहा कि जूना अखाड़े ने यह दृढ़ता से स्थापित किया है कि महामंडलेश्वर पद के लिए जाति कोई बाधा नहीं है। केवल तप और अध्ययन ही एकमात्र मापदंड है और समाज के सब वर्गों के लोग इसमें सम्मिलित हो सकते हैं। अखाड़े ने यह साबित किया है कि पद जाति से नहीं, योग्यता के आधार पर मिलना चाहिए। विश्व हिंदू परिषद जूना अखाड़े की इस अनूठी पहल का अभिनंदन करता है।

पूर्व छात्रा सम्मेलन-2024 "आओ फिर मिलें हम"

सरस्वती बालिका उच्च माध्यमिक विद्या मंदिर- स्वर्ण जयंती वर्ष

आदर्श शिक्षा परिषद समिति, जयपुर द्वारा संचालित सरस्वती बालिका उच्च माध्यमिक विद्या मंदिर के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष में पूर्व छात्रा सम्मेलन 'आओ फिर मिलें हम' का आयोजन बीती 28 अप्रैल को किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता व संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने कहा कि युवा पीढ़ी को संस्कारशील बनाने में विद्या भारती की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा के साथ संस्कार आवश्यक है और साथ ही जोड़ने का संदेश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि हर माह में एक बार सभी परिवारजनों को सामूहिक मंगल जागरण तथा समसामयिक विषयों पर विचार विमर्श करना चाहिए ताकि परिवार में संस्कारक्षम वातावरण उत्पन्न हो सके।

मुख्य अतिथि श्रीमती दीया कुमारी ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाना होगा। इसके लिए छात्र जीवन में डिजिटल शिक्षण अधिगम पर जोर दिया एवं छात्र जीवन में खेलों को महत्वपूर्ण बताया।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि श्रीमती शालिनी सेतिया (मैनेजिंग ट्रस्टी एसके फाउण्डेशन) ने विद्यालय में डिजिटल कक्षा कक्ष का उद्घाटन किया एवं श्रीमती मधु शर्मा (आईएएस, पूर्व छात्रा) ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन से सभी को प्रेरित किया एवं अपने जीवन में आईएएस बनने का श्रेय विद्यालय को दिया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती दीप्ति आनन्द द्वारा सभी का स्वागत एवं परिचय करवाया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री गौरव मोदी (निदेशक, मोदी इन्फा.) ने कहा कि विद्यार्थियों को खेल के साथ-साथ अध्ययन पर भी जोर देना चाहिए।

पूर्व छात्राओं ने इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम में पूर्व छात्राओं एवं विशिष्ट गणमान्य अतिथियों की संख्या 780 रही।

जयपुर

शोध एवं संरक्षण यात्रा के माध्यम से दिया विरासत बचाने का संदेश

विश्व विरासत दिवस (18 अप्रैल 2024) पर विरासत शोध एवं संरक्षण यात्रा का आयोजन किया गया। लगभग 30 इतिहासकारों, शोधार्थियों एवं विशेषज्ञों के दल ने प्रातः से सायंकाल तक मेवाड़ के पर्वतों और जंगलों में राणा सांगा, उदयसिंह एवं महाराणा प्रताप कालीन ऐतिहासिक पुरावशेषों का अवलोकन किया।

विशेषज्ञों द्वारा इनको नष्ट-भ्रष्ट होने से रोकने और अतिक्रमणों से बचाने की राज्य सरकार, पुरातत्व विभाग एवं स्थानीय प्रशासन से मांग की गई। इस यात्रा का आयोजन भारतीय इतिहास संकलन समिति उदयपुर, साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ और प्रताप गौरव

केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था।

महाराणा सांगा कालीन झरणां की सराय, बावड़ी और मन्दिर, त्रिमुखी बावड़ी, उदयसिंह कालीन बेडवास की बावड़ी, लकड़कोट, उदय निवास, झामेश्वर महादेव, अरावली की प्रारंभिक चट्टानों आदि स्थानों का अवलोकन कर इनके ऐतिहासिक, पुरातात्विक, भूवैज्ञानिक महत्व पर चर्चा की।

आसीन्द

सेवा भारती ने तैयार किए 2 हजार रक्तदाता

भीलवाड़ा जिले के पश्चिम में स्थित है आसीन्द जहाँ अरावली की तलहटी में दूर-दूर बसे हैं छोटे-छोटे गाँव। इन गाँवों में जब किसी व्यक्ति को रक्त की आवश्यकता हो तो बहुत विकट स्थिति बन जाती थी। इस स्थिति को दूर करने के लिए सहारा बनी है सेवा भारती। सेवा भारती की आसीन्द इकाई ने वर्ष 2018 में रक्तदान शिविर (बरसनी में) लगाकर इसकी शुरुआत की। अब तक 25 से अधिक शिविरों का आयोजन करके 2 हजार से अधिक नये रक्तदाता तैयार किये जा चुके हैं। अब प्रतिवर्ष 10 रक्तदान शिविरों का आयोजन सेवा भारती के द्वारा किया जाता है एवं दूर-दराज के स्थानों पर जरूरतमंदों को समय से रक्त उपलब्ध कराया जा रहा है।

महासती अनसूइया

महर्षि अत्रि की पत्नी थीं महासती अनसूइया। उन्होंने कठोर तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न किया और भगवान दत्तात्रेय को बालक रूप में प्राप्त किया। अपने वनवास के दौरान प्रभु श्रीराम लक्ष्मण व सीताजी के साथ महर्षि अत्रि के आश्रम में गये, जहां ऋषि पत्नी अनसूइया ने माता सीता को स्त्रीत्व के साथ-साथ पतिव्रता धर्म की विस्तारपूर्वक शिक्षा दी। एक बार ऋषि मांडव्य ने एक ऋषि पत्नी को सूर्योदय होते ही विधवा हो जाने का श्राप दिया। सती अनसूइया ने अपनी शक्ति से सूर्य को उगने नहीं दिया। सभी देवताओं और ऋषियों ने अनसूइया को सूर्योदय के स्थगन के कारण होने वाली परेशानी को दूर करने का अनुरोध किया। सूर्योदय तब हुआ, जब सती अनसूइया ने उस स्त्री के पति को पुनर्जीवित करने और उसके सौभाग्य की रक्षा करने का वचन लिया व शपित महिला को श्राप से मुक्त कराया। उनकी पतिभक्ति अर्थात् सतीत्व का तेज इतना अधिक था कि एक बार उनकी परीक्षा लेने आये त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को अपनी तपोशक्ति से अबोध शिशु बना दिया था। माता अनसूइया का प्रसिद्ध मंदिर चमोली जिले (उत्तराखण्ड) के मण्डल स्थान पर नागर शैली में बना हुआ है, जहां प्रतिवर्ष वार्षिक मेला अयोजित किया जाता है।

दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस : वर्ष 1972 में पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर जन-जागृति लाने हेतु इस दिवस की घोषणा संयुक्त राष्ट्र द्वारा की गई थी। यह दिवस 5 जून,1973 को पहली बार मनाया गया।

05 जून

विश्व रक्तदान दिवस : रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा रक्तदान हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह दिवस प्रतिवर्ष 14 जून को मनाया जाता है।

14 जून

जंक फूड खाने से होती है भूलने की बीमारी

यूनिवर्सिटी ऑफ साउर्दन कैलिफोर्निया (अमेरिका) में हुए एक ताजा शोध में बताया गया है कि जो बच्चे बचपन में मीठी चीजें (टॉफियां, कैंडी या जंक फूड) अधिक मात्रा में खाते हैं, उसका असर उम्र भर रहता है। इससे वे हमेशा के लिए मानसिक तौर पर कमजोर हो जाते हैं। उन्हें लम्बे समय तक कोई बात याद नहीं रहती है। इसी विश्वविद्यालय में बॉयोलॉजिकल साइंस के प्रो. स्कॉट कैनोस्की का कहना है कि जंक फूड खाने वाले बच्चे बाद में चाहे स्वस्थ डाइट लेने लगें तो भी जंक फूड का असर 20-25 वर्ष तक नहीं जाता।

कुकिंग टिप्स

खीर बनाते समय यदि पतली लग रही हो तो थोड़े से चावलों को पीसकर मिलाने से खीर गाड़ी और स्वादयुक्त हो जाती है।

घरेलू नुस्खा

लगातार सिरदर्द रहता हो तो सेब को छीलकर बारीक काटें और उसमें थोड़ा सादा नमक व काला नमक मिलाकर सुबह-सुबह खाली पेट 7 दिन तक सेवन करें, आराम मिलेगा।

गीता- दर्शन

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।

अर्जुन कहते हैं, हे कृष्ण! यह मन बड़ा चंचल, अशांत स्वभाव वाला, बड़ा दृढ़ और बलवान है। इसलिये उसको वश में करना मैं वायु को रोकने की भाँति अत्यंत दुष्कर मानता हूँ। *(6/34)*

आओ संस्कृत सीखें-37

- यदि आपके पास समय है तो मेरे साथ आइए।
  यदि समयः अस्ति तर्हिकृपया आगच्छतु मया सह।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. अरुणाचल प्रदेश में बनी सेला सुरंग कितने फीट ऊँचाई पर बनी है?
2. भारत में दिया जाने वाला सर्वोच्च वीरता सम्मान कौन सा है?
3. केन्द्र सरकार ने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) कब लागू किया ?
4. प्रतिदिन सुबह किस चैनल पर अयोध्या के श्रीरामलला मंदिर से भव्य आरती का प्रसारण प्रारंभ किया गया है?
5. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जो अब लोकपाल के नए अध्यक्ष बने हैं?
6. केरल सरकार द्वारा भारत का पहला सरकारी स्वामित्व वाला कौन सा ओटीटी प्लेटफॉर्म लांच किया गया है?
7. अरुणाचल प्रदेश का नव निर्मित 26वां जिला कौन सा है?
8. सम्राट अशोक किसका उत्तराधिकारी था?
9. भारतीय रुपए का पहचान चिह्न (प्रतीक) क्या है?
10. झांसी की स्थापना ओरछा के किस शासक द्वारा की गई थी?

उत्तर इसी अंक में...

बोधकथा

बड़ा कौन

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के दो शिष्य थे। दोनों ही विनम्र और प्रतिभा संपन्न थे। एक दिन किसी कारणवश उन दोनों में विवाद छिड़ गया। विवाद का मूल था, बड़प्पन। बहस का प्रारंभ इस बात से हुआ कि उन दोनों में बड़ा कौन है? बहस इतनी बढ़ गई कि दोनों ने एक-दूसरे को शास्त्रार्थ की चुनौती दे दी। वेद-विज्ञान जैसे गंभीर विषयों पर काफी देर तक खुलकर चर्चा हुई। लेकिन वे किसी निर्णय तक नहीं पहुंच पा रहे थे कि उनमें बड़ा कौन है? जब उन्हें लगा कि किसी समाधान तक पहुंचना मुश्किल है तो वे अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के पास पहुंचे। उन्हें पूरी बात बताई। स्वामी जी ने शांत भाव से दोनों की बात सुनी। कुछ देर चुप रहकर स्वामी जी थोड़ा मुस्कुराए। उनकी मुस्कुराहट देखकर शिष्यों की आतुरता और बढ़ गई। स्वामी जी ने अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा, इस संसार में बड़ा वह है जो दूसरों को बड़ा मानता है। गुरु मुख से यह सुनकर विवाद का क्रम बदल गया। अब दोनों यह कहने के लिए तैयार हो गए कि मैं बड़ा नहीं हूं। पारस्परिक विद्रोह की सरिता स्वामीजी के वचन रूपी नौका ने पार करा दी। अब दोनों प्रसन्नता से अध्ययन और उपासना से जुड़ गए।

वर्ग पहेली

नीचे भारत की रक्षा उपकरणों में से 10 प्रमुख मिसाइलों के नाम दिए हुए हैं उन्हें खोजिए।

आ	पृ	थ्	वी	का	जी
का	ल	श्री	अ	रि	चा
श	शु	स	ग	ग	ना
च	त्रि	ह्मो	नि	सा	र
भा	र	ब्र	र्भ	फी	हा
ध	नु	ष	य	ओ	प्र

उत्तर: पृथ्वी, अग्नि, त्रिशूल, आकाश, नाग, धनुष, ब्रह्मोस, प्रहार, सागरिका, शौर्य

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल प्रश्नोत्तरी - 55

बाल मित्रों, 1 अप्रैल का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **05 जून, 2024**

1. अ.भा.प्रतिनिधि सभा की तीन दिवसीय बैठक इस बार कहाँ आयोजित हुई?
   (क) मुम्बई (ख) पुणे (ग) नागपुर (घ) दिल्ली
2. मई 2024 से अहिल्याबाई होल्कर का कौन सा जयंती वर्ष प्रारंभ हो रहा है?
   (क) 125वां (ख) 225वां (ग) 300वां (घ)250वां
3. संघ रचना के अनुसार वर्तमान में देशभर में कितने प्रांत है?
   (क) 75 (ख) 35 (ग) 45 (घ) 65
4. महाकौशल प्रांत में शीत शिविर के दौरान नवीन शाखाएं कितनी बढ़ी?
   (क) 170 शाखा (ख)150 शाखा (ग) 175 शाखा (घ) 200 शाखा
5. भगवान विष्णु के 10 अवतारों में से 7वां अवतार कौन सा हैं?
   (क) राम (ख) कृष्ण (ग) बौद्ध (घ) कूर्म
6. भारतीय नव संवत्सर (वर्ष प्रतिपदा) किस तिथि से प्रारंभ होता है?
   (क) चैत्र शु.1 (ख) चैत्र शु. 9 (ग) चैत्र शु.3 (घ) चैत्र शु.5
7. आंध्र प्रदेश में नव संवत्सर को किस नाम से जाना जाता है?
   (क) चेटीचंड (ख) युगादि (ग) गुड़ी पड़वा (घ) नौरोज
8. याज्ञवल्क्य ऋषि के साथ शास्त्रार्थ करने वाली विदुषी कौन थी?
   (क) अपाला (ख) गार्गी (ग) लोपामुद्रा (घ) मैत्रेयी
9. विश्व विरासत दिवस कब मनाया जाता है?
   (क) 18 अप्रैल (ख) 20 अप्रैल (ग) 22 अप्रैल (घ) 25 अप्रैल
10. क्रांतिकारी नारायण राव भागवत का बलिदान कब हुआ था?
   (क) 10 अप्रैल (ख) 30 अप्रैल (ग) 20 अप्रैल (घ) 18 अप्रैल

रास्ता खोजो

किस पाइप से होकर चूहिया तक पहुँचेंगे

बाल प्रश्नोत्तरी-53 के परिणाम

कुमकुम अंश रणजीत परमवीर अनाया

1. कुमकुम गौतम, बौंली, सवाईमाधोपुर
2. अंश झा, मीनावाला, जयपुर
3. रणजीत डिडेल, मेड़ता सिटी, नागौर
4. परमवीर चौधरी, शाहपुरा, भीलवाड़ा
5. अनाया विजय, बसंत बिहार, कोटा
6. नमन सिंह गोहिल, भगवतगढ़,सवाईमाधोपुर
7. अक्षिता जांगिड, डीडव्या मोहल्ला, दौसा
8. सृष्टि शर्मा, टोडाभीम, करौली
9. कमल सोनी, बंगला नगर, बीकानेर
10. ज्योति सोनी, बाड़मेर

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 55)

(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम..कक्षा..........पिता का नाम..

उम्र.......... पूर्ण पता..

......................पिन..................मोबाइल..

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

1 से 15 जून, 2024 (ज्येष्ठ कृष्ण 9 से शुक्ल 9 तक)

जन्म दिवस

ज्येष्ठ कृ.10 (1 जून) – वीर आल्हा जयंती
ज्येष्ठ कृ.12 (3 जून) – सम्राट पृथ्वीराज चौहान जयंती
– 14वें तीर्थंकर अनन्तनाथ जयंती
ज्येष्ठ कृ.14 (5 जून) – 16वें तीर्थंकर शान्तिनाथ जंयती
ज्येष्ठ शु.3 (9 जून) – वीर छत्रसाल जयंती
15 जून (1884) – क्रांतिकारी तारकनाथ दास जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

5 जून (1973) – द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी की पुण्यतिथि
9 जून (1900) – बिरसा मुण्डा का बलिदान
ज्येष्ठ शु.4 (10 जून) – 5वें गुरु अर्जुनदेवजी का बलिदान(प्रा.मत)
13 जून (1858) – राजा बलभद्र सिंह चहलारी की वीरगति
13 जून (1850) – बाबा साहब नरगुन्दर को फांसी

महत्वपूर्ण घटनाएं/ अवसर

2 जून (1818) – पं. दीवानचन्द्र मिश्र की मुल्तान विजय

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

4 जून – वट सावित्री व्रत, **6 जून** – बड़ पूजन अमावस्या

उत्तर: जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं- 1. 13 हजार, 2. परमवीर चक्र 3. 11 मार्च, 2024 4. दूरदर्शन नेशनल 5.अजय माणिकराव खानविलकर 6. सी स्पेस, 7.केयी पानयोर 8. बिंदुसार 9. ₹ 10. बीरसिंह बुंदेला

उत्तर: बाल प्रश्नोत्तरी 53 -(1)क (2)ख (3)घ (4)ख (5)क (6)ख (7)क (8)क (9)ख (10)क

पाथेय कण के अभियान से जुड़ें। हमें लिखें अपनी बात

हमारे देश की परंपरा, संस्कृति और स्व को सुरक्षित रखने के लिए हो रहे प्रयत्नों में पाथेय कण भी अपनी भूमिका विगत 39 वर्षों से निरंतर निभा रहा है। वर्तमान समय में मोबाइल की अत्यधिक आदत तथा सभी ओर से हो रहे सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण युवा-किशोर पीढ़ी में न केवल डिप्रेशन बढ़ता जा रहा है वरन वे अपने गौरवशाली इतिहास, महान पूर्वजों और संस्कृति की श्रेष्ठ परंपराओं से कटते जा रहे हैं।

ऐसी स्थिति में पाथेय कण जैसी जागरण पत्रिकाओं का महत्व बढ़ जाता है। इस पत्रिका में इतिहास, धर्म, परम्परा, संस्कृति के बारे में तथ्यपरक शोधपूर्ण सामग्री तो रहती ही है देश-समाज को प्रभावित करने वाली घटनाओं के बारे में राष्ट्रीय दृष्टिकोण सहित समाचार प्रकाशित किए जाते हैं। साथ ही बाल, किशोर, युवा व महिलाओं सहित सभी के लिए मनोवैज्ञानिक विश्लेषण युक्त सामग्री भी रहती है। क्या इस अभियान से आप जुड़ना चाहेंगे? कुछ योगदान करना चाहेंगे? आप किस प्रकार योगदान कर सकते हैं- हमें बताइए। हमसे जुड़ने के लिए हमें वाट्सएप नंबर पर अथवा ईमेल से अपने विचार व सुझाव भेज सकते हैं।

7976582011 patheykan@gmail.com

पंचांग- ज्येष्ठ (कृष्ण पक्ष)

24 मई से 6 जून, 2024 तक

नौ तपा प्रारंभ- 25 मई, **चतुर्थी व्रत**- 26 मई, **पंचक प्रारंभ**- 29 मई (रात 8:06 बजे), **अपरा एकादशी व्रत**- 2 जून, **पंचक समाप्त**- 2 जून (रात 1:40 बजे), **भौम प्रदोष व्रत**- 4 जून, **वट सावित्री व्रत** (तीन दिवसीय)- 4 जून, **देव पितृकार्य अमावस्या**- 6 जून (बड़ पूजन अमावस्या), **रोहिणी व्रत** (जैन)- 6 जून

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 24-25 मई नीच की राशि **वृश्चिक** में, 26-27 मई को **धनु** राशि में, 28-29 मई को **मकर** राशि में, 30-31 मई को **कुंभ** राशि में, 1 व 2 जून को **मीन** राशि में, 3-4 जून को **मेष** राशि में तथा 5-6 जून को उच्च की राशि **वृष** में गोचर करेंगे।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **शनि** यथावत क्रमशः वृष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **शुक्र** यथावत वृष राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** 1 जून को दोपहर 3:37 बजे मीन से मेष राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 31 मई को दोपहर 12:12 बजे मेष से वृष राशि में प्रवेश करेंगे।

क्या आपके जीवन में पाथेय कण से आया है बदलाव ?

अनेक लोग कहते रहते हैं कि पाथेय कण पढ़कर उनके जीवन में परिवर्तन आया। क्या आप भी ऐसे लोगों में शामिल हैं? अपने ऐसे संस्मरण, अनुभव, जीवन में आए बदलाव को लिखकर अपनी फोटो सहित हमें भेजें ताकि सभी के साथ साझा किए जा सकें।

ई-मेल करें :
patheykan@gmail.com
या डाक से भेजें : **पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर जयपुर-302017**

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी 12

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

युवा शिवाजी ने अपने साथी सैनिकों के साथ रोहिड़ेश्वर मंदिर में रक्ताभिषेक कर 'स्वराज्य स्थापना' की शपथ ली...

इस विशेष अवसर पर शिवा के प्रमुख साथी नेताजी पालकर, येसासी कंक, तानाजी मालसुरे, दादाजी नारंग, प्रभु गुप्ते साथ थे।
इन सब युवा योद्धाओं को आशीर्वाद देने दादाजी कोंडदेव, बाजी पासलकर और नरसी प्रभु उपस्थित थे।

... शिवाजी ने मावले (पुणे का पश्चिमी पहाड़ी क्षेत्र) के हर क्षेत्र में अपने विश्वसनीयों की संगठित पैदल सेना तैयार कर ली।
...गुप्तचरों से सभी पहाड़ी किलों की जानकारी लेना प्रारंभ हुआ। 'शिवाजी' सजग व दयालु होने के साथ कई मामलों में कठोर थे...

यह न्याय शिवाजी द्वारा अपने लोगों के लिए भी संदेश था।

पाक्षिक
पाथेय कण
(16-31 मई,2024)
(10 मई को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

1st Rank IAS 2023
पूरे भारत में हिन्दी माध्यम

Springboard ACADEMY
AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

Star achievers who realised their dreams of civil services with us

IAS 2023 में चयनित
स्प्रिंगबोर्ड के सभी अभ्यर्थियों को
हार्दिक शुभकामनाएं

IAS MENTORSHIP PROGRAM - 2023

रैंक 53

मोहन लाल
हिन्दी माध्यम 1st Rank

रैंक 551

मोहन लाल मंगावा
हिन्दी माध्यम

रैंक 555

ईश्वर लाल गुर्जर
हिन्दी माध्यम

रैंक 755

दीपक चौधरी
अंग्रेजी माध्यम

रैंक 793

अशोक सोनी
हिन्दी माध्यम

रैंक 854

सचिन गुर्जर
हिन्दी माध्यम

हिन्दी माध्यम से IAS परीक्षा 2023 का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur
9636977490, 0141-3555948
स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रमाणित क्लास नोट्स उपलब्ध
The Notes Hub 7610010054, 7300134518

ऐप डाउनलोड करने के लिए QR Code स्कैन करें

Connect with us-
Springboard Academy Online
Springboard Academy Jaipur

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 मई, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,